

पश्चिमी मीडिया - मानवता के खिलाफ अपराधों की जिम्मेदारी

गाजा पर चल रहा इजरायली हमला अक्सर पश्चिमी मीडिया आउटलेट्स द्वारा “युद्ध” के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह शब्दावली न केवल भ्रामक है - यह नैतिक और कानूनी रूप से गलत है। युद्ध का अर्थ दो संप्रभु राज्यों के बीच संघर्ष होता है। हालांकि, गाजा एक राज्य नहीं है। यह एक घनी आबादी वाला क्षेत्र है जो सैन्य कब्जे और घेराबंदी के अधीन है, बिना सेना, नौसेना या वायु सेना के। अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत, विशेष रूप से जिनेवा सम्मेलनों के प्रथम अतिरिक्त प्रोटोकॉल के अनुच्छेद 1(4) के अनुसार, कब्जे के तहत रहने वाले लोगों को **प्रतिरोध करने का अधिकार** है। इजरायल जो कर रहा है वह युद्ध नहीं है; यह एक **नागरिक आबादी के खिलाफ सैन्य अभियान** है, एक ऐसा कार्य जो मानवीय कानून के सिद्धांतों का मौलिक रूप से उल्लंघन करता है।

सामूहिक लापता होना: चुप कराया गया आतंक

गाजा में तबाही सर्वनाश के स्तर तक पहुंच गई है। हाल ही में **हार्वर्ड अध्ययन** में पाया गया कि **377,000 से अधिक फिलिस्तीनी लापता** हैं, यह संख्या आधिकारिक मृत्यु संख्या 62,000 से **छह गुना अधिक** है। इजरायल के हर सीमा पर नियंत्रण - जिसमें **रफाह और भूमध्य सागर** शामिल हैं - के साथ लोगों के पास भागने के लिए कोई जगह नहीं है। इन लापता व्यक्तियों को मृत मान लिया जाता है, जो अपने घरों के मलबे के नीचे दबे हुए हैं। फिर भी, प्रमुख पश्चिमी मीडिया आउटलेट या तो इस स्तर की तबाही को कम करके आंकते हैं या **पूरी तरह से अनदेखा करते हैं**, इसके बजाय “सटीक हमलों” और “पार्श्विक क्षति” के स्वच्छंद कथनों को उजागर करना पसंद करते हैं।

मौन और बदनामी का नेटवर्क

इजरायल की कार्रवाइयों को **लॉबिंग और मीडिया प्रभाव के विशाल अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क** द्वारा समर्थन प्राप्त है। दुनिया भर में हजारों इजरायल समर्थक संगठन काम करते हैं, जो **व्यक्तिगत हमलों** के माध्यम से आलोचना को दबाने का प्रयास करते हैं। यहूदी-विरोधी, नाज़ी सहानुभूति या आतंकवाद के समर्थन के आरोप नियमित रूप से उन पत्रकारों, शिक्षाविदों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं पर लगाए जाते हैं जो खुले तौर पर बोलते हैं।

यह डराना-धमकाना मुख्यधारा के पश्चिमी मीडिया में शामिल शक्तिशाली व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा और बढ़ाया जाता है। **बीबीसी** में, रफी बर्ग को लगातार इजरायली कार्रवाइयों को अनुकूल रूप में प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है। इस बीच, **जर्मनी का एक्सल स्प्रिंगर मीडिया समूह**, जो अवैध इजरायली बस्तियों में रियल एस्टेट से लाभ कमाता है, खुले तौर पर इजरायल समर्थक संपादकीय नीतियों को लागू करता है। ये यादृच्छिक पक्षपात नहीं हैं - ये **प्रणालीगत, संस्थागत गठजोड़** का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पत्रकारीय सत्य के ऊपर वैचारिक निष्ठा को प्राथमिकता देते हैं।

जवाबदेही को अवैध ठहराना

इजरायली प्रचार तंत्र अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को भी निशाना बनाता है। **यूएन वॉच**, जेनेवा में स्थित एक गैर-सरकारी संगठन, ने **संयुक्त राष्ट्र, यूएनआरडब्ल्यूए, और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आईसीसी)** की विश्वसनीयता को कम करने के प्रयासों का नेतृत्व किया है, उन पर इजरायली युद्ध अपराधों की जांच करने के लिए यहूदी-विरोधी होने का आरोप लगाकर। ये अलग-थलग बदनामी अभियान नहीं हैं - ये **किसी भी प्रकार की अंतरराष्ट्रीय निगरानी या न्याय को अवैध ठहराने की जानबूझकर रणनीतियाँ** हैं।

हथियार के रूप में गलत सूचना

डिजिटल क्षेत्र में, **#Pallywood** और **#TheGazaYouDontSee** जैसे हैशटैग का उपयोग संदेह पैदा करने और फिलिस्तीनियों के जीवंत अनुभवों को खारिज करने के लिए किया जाता है। **#Pallywood** सनकी रूप से फिलिस्तीनियों पर चोटों और मौतों को नकली करने का आरोप लगाता है, जबकि **#TheGazaYouDontSee** अकाल और तबाही के दृश्य साक्ष्यों का मुकाबला करने की कोशिश करता है, जिसमें सापेक्ष सामान्यता की सावधानीपूर्वक चुनी गई छवियां प्रदर्शित की जाती हैं। ये अभियान हानिरहित नहीं हैं - ये **जानबूझकर गलत सूचना के प्रयास** हैं जो वैश्विक एकजुटता को कमजोर करने और अत्याचारों को सामान्य करने के लिए हैं।

स्ट्राइकर नजीर

हिंसा को सामान्य करने में मीडिया की भूमिका का एक भयावह ऐतिहासिक समानांतर है: **जूलियस स्ट्राइकर, डेर स्टर्मर** का नाज़ी प्रकाशक, जिसे **नूर्नबर्ग ट्रायल्स** में मुकदमा चलाया गया और दोषी ठहराया गया। स्ट्राइकर ने कभी किसी को शारीरिक रूप से नुकसान नहीं पहुँचाया, लेकिन नस्लीय घृणा और प्रचार के उनके अथक उकसावे को **मानवता के खिलाफ अपराधों** के लिए दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त माना गया। यह नजीर स्पष्ट है: **शब्द मार सकते हैं**, खासकर जब उनका उपयोग सामूहिक हिंसा को सही ठहराने और सक्षम करने के लिए किया जाता है।

पत्रकारिता के माध्यम से सह-अपराध

आज के पश्चिमी मीडिया न केवल निष्पक्ष रूप से रिपोर्ट करने में विफल हो रहे हैं - वे **सक्रिय रूप से सह-अपराधी** हैं जो सार्वजनिक कथनों को आकार देने में हैं जो एक कब्जे वाले लोगों की सामूहिक सजा को सही ठहराते हैं। उनका व्यंजनापूर्ण भाषा का उपयोग, महत्वपूर्ण तथ्यों को छोड़ देना, और पीड़ितों की बदनामी गलतियों की एक श्रृंखला नहीं है। यह **चल रहे अत्याचारों के लिए सहमति निर्मित करने की एक प्रणालीगत प्रक्रिया** का हिस्सा है।

निष्कर्ष: जवाबदेही के लिए एक पुकार

गाजा में खूनखराबा खालीपन में नहीं हो रहा है - यह एक वैश्विक सूचना संरचना द्वारा संभव बनाया गया है जो दमन को रक्षा के रूप में छिपाता है और नरसंहार को नीति के रूप में चित्रित करता है। पश्चिमी मीडिया की सह-अपराधिता को **न केवल नैतिक रूप से, बल्कि कानूनी रूप से भी जांचा जाना चाहिए**। स्ट्राइकर का मामला साबित करता है कि **प्रचार एक तटस्थ कार्य नहीं है**। यह मानवता के खिलाफ अपराधों में भागीदारी का एक रूप है। यदि दुनिया न्याय और मानव अधिकारों के प्रति गंभीर है, तो उसे अपनी जांच को उन पत्रकारों, संपादकों और कार्यकारियों तक विस्तारित करना चाहिए जो इन अपराधों को अदृश्य, स्वीकार्य या उचित बनाने में मदद करते हैं।